

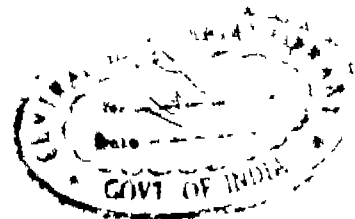


भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY



सं. 451]
No. 451]

नई दिल्ली, बुधवार, अगस्त 7, 1996/श्रावण 16, 1918
NEW DELHI, WEDNESDAY, AUGUST 7, 1996/SHRAVANA 16, 1918

वस्त्र मंत्रालय

आदेश

नई दिल्ली, 26 जुलाई, 1996

का. आ. 557(अ)—केन्द्रीय सरकार, हथकरघा (उत्पादनार्थ वस्तु आरक्षण) अधिनियम, 1985 (1985 का 22) की धारा 3 की उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के आदेश संख्या 459(अ) तारीख 4 अगस्त, 1986 और 477(अ) तारीख 6 अगस्त, 1986 का अधिक्रमण करते हुए, सलाहकार समिति द्वारा की गई सिफारिशों पर विचार करने के पश्चात्, अपना यह समाधान हो जाने पर कि हथकरघा उद्योग के संरक्षण और विकास के लिए ऐसा करना आवश्यक है, तत्काल प्रभाव से निम्नलिखित सारणी में वर्णित वस्तुओं अथवा वस्तुओं की श्रेणी का उत्पादन केवल हथकरघों द्वारा आरक्षित करने का निर्देश देती है, अर्थात् :—

सारणी

क्र. सं.	वस्तु	हथकरघों द्वारा उत्पादन हेतु आरक्षित क्षेत्र
1	2	3
1.	साड़ी	(क) साड़ी एक ऐसा कपड़ा है, जो सूत या रेशम या उनके किसी मिश्रण से धागे के काउंट और लम्बाई-चौड़ाई पर ध्यान दिए बिना बनाया गया है। इसे सामान्यतः इसी नाम से जाना जाता है और इसकी निम्नलिखित संयुक्त विशेषताएं भी हैं :— (1) किनारी और/या शीर्ष और/या मुख्य भाग में अतिरिक्त ताने और/या अतिरिक्त बाने का डिजाइन जिसमें बूटा भी है, जिसमें कोई रंगीन या ग्रे या विरंजित धागा या जरी या कोई अन्य धात्विक/धातु की तह खड़े धागे या उनका मिश्रण भी शामिल है। और/या (2) जिसमें दोस रंगीन बुनी हुई किनारी है। (ख) बांधनु और रंजित साड़ी, ताने वार और/या बाने वार, जो सूत या रेशम या कृत्रिम रेशम या उनके किसी मिश्रण से बनी है, चाहे उसमें किसी भी काउंट के धागे व लम्बाई-चौड़ाई का प्रयोग किया गया हो व अतिरिक्त ताने या अतिरिक्त बाने के सहित या रहित मजबूत दोस बुनी हुई किनारी है।

1	2	3
		<p>टिप्पण :—</p> <p>(1) इस निदेश की कोई बात 100 प्रतिशत सिंथेटिक रेशो/धागे अर्थात् पालिएस्टर, नायलॉन इत्यादि से या उनके किसी मिश्रण से बनाई गई साड़ियों पर लागू नहीं होगी।</p> <p>(2) इस निदेश की कोई बात 45 प्रतिशत भार से अधिक मानव निर्मित रेशो/धागे के (जिसके अन्तर्गत विस्कोज रेयान भी है) किसी प्राकृतिक या मानव निर्मित रेशो/धागे से बनाई गई साड़ियों पर लागू नहीं होगी।</p> <p>(3) इस निदेश की कोई बात क्रेप, शेफान, चिनोन, जार्जेट और सूती वायल साड़ियों पर लागू नहीं होगी।</p> <p>(4) इस निदेश की कोई बात किनारी में बनी हुई अतिरिक्त ताने की डिजाइन वाली ग्रे/विरंजित रेशमी साड़ियों पर लागू नहीं होगी।</p>
2.	धोती	<p>धोती एक ऐसा कपड़ा है, जो सामान्यतः इसी नाम से जाना जाता है व धागे के काउंट और लम्बाई-चौड़ाई को विचार में न रखते हुए सूत या रेशम या उनके किसी मिश्रण से बनाया गया है, जिसकी किनारी (सेलवेज सहित) फन्नी के 16 दंती से ज्यादा का प्रयोग करके अतिरिक्त ताने और/या अतिरिक्त बाने के डिजाइन से बनाई जाती है व इसका शीर्ष अतिरिक्त बाने के डिजाइन में हो भी सकता है और नहीं भी।</p> <p>टिप्पण :—</p> <p>(1) इस निदेश की कोई बात 100 प्रतिशत सिंथेटिक रेशो/धागे अर्थात् पालिएस्टर, नायलॉन इत्यादि से या उनके किसी मिश्रण से बनाई गई धोतियों को लागू नहीं होगी।</p> <p>(2) इस निदेश की कोई बात 45 प्रतिशत भार से अधिक मानव निर्मित रेशो/धागे के (जिसके अंतर्गत विस्कोज रेयान भी है) किसी प्राकृतिक या मानव निर्मित रेशो/धागे के मिश्रण से बनाई गई धोतियों को लागू नहीं होगी।</p>
3.	तौलिया, गमछा और अंगवस्त्रम्	<p>तौलिया एक ऐसा कपड़ा है जो बोर्डर अथवा शीर्ष सहित सादा, चटार्ड, टुइल, छत्ते, हक्का-बैक अथवा इन सब के मिश्रण से बना जाता है। इसकी निम्नलिखित संयुक्त विशेषताएं भी हैं :—</p> <p>(1) इसे सूत अथवा सूत के मिश्रण के साथ अन्य रेशों को मिलाकर तैयार किया जाता है।</p> <p>(2) इसे अलग-अलग लम्बाई-चौड़ाई में तैयार किया जाता है।</p> <p>(3) यह सफेद अथवा रंगीन हो सकता है।</p> <p>(4) जैकार्ड पर तैयार किये गये तौलिए सजावटी डिजाइन में हो सकते हैं।</p> <p>(5) मैट बुनाई के साथ तैयार किया गया तौलिया केरल में सामान्यतः झरझा थोरथू और तमिलनाडु में झरझो थुन्दू के नाम से जाना जाता है और इसमें गमछा और अंगवस्त्रम् भी शामिल हैं।</p>

1	2	3
4.	लुंगी	लुंगी एक ऐसा कपड़ा है जो सूत या कृत्रिम रेशम या इनके किसी मिश्रण से बनाया गया है, जिसकी चौड़ाई 110 से.मी. या उससे अधिक है और इसमें प्रत्येक इंच पर 64 या उससे अधिक ताने के धागे हैं और जिसमें चेक और/या धारी पैटर्न बनाने के लिए रंगे हुए धागे का प्रयोग करके बुना गया है ।
5.	खेस, बैडशीट, बैडकवर, पलंगपोश, फर्नीशिंग (जिसमें टेपेस्ट्री, अपहोजरी शामिल है)	खेस, बैडशीट, बैडकवर, पलंगपोश, फर्नीशिंग (जिसमें टेपेस्ट्री अपहोजरी शामिल है) चाहे देश के विभिन्न भागों में किसी भी नाम से जाने जाते हों जिसके अंतर्गत डबल क्लाथ और बंधेज भी है जो सूत या कृत्रिम रेशम अथवा इनके मिश्रण से बहुपद चालित हथकरघा पर और/या छाबी और/या जैकार्ड सहित शुद्ध सूती ताने की दशा में 200 हुक तक और सूती तथा कृत्रिम रेशम ताने के मिश्रण की दशा में 400 हुक तक जिसमें काउंट व लम्बाई-चौड़ाई पर ध्यान दिये बिना बुना गया हो । टिप्पण :— इस निदेश की कोई बात सादी बुनाई के कपड़े (प्लेन शीटिंग) पर लागू नहीं होगी ।
6.	जामाकालम दरी या डरट	जामाकालम दरी या डरट सामान्यतः इसी नाम से जाने जाते हैं, जो सूत या कृत्रिम रेशम या ऊन या जूट या उनके किसी मिश्रण से एकल धागे या परिणामी बटे हुए धागे का प्रयोग करके सादी बुनाई या टिब्ल बुनाई या टिब्ल और सादी बुनाई के संयोजन से 24 ताने के धागे/इंच तक किसी भी लम्बाई-चौड़ाई में तैयार किया गया है ।
7.	ड्रेस मेटेरियल	ड्रेस मेटेरियल जिसके अंतर्गत मशरू कपड़ा और धागा बांधनू और रंजित कपड़ा भी है । इसे सूत या रेशम (जिसके अंतर्गत स्पन रेशम भी है) या कृत्रिम रेशम या इनके किसी मिश्रण से काउंट और लम्बाई-चौड़ाई का ध्यान किए बिना तैयार किया गया है व इसकी किनारी और/या मुख्य भाग अतिरिक्त बाने की डिजाइन से बनाई गई है । इसके अंतर्गत तेलिया रूमाल, रियल मद्रास रूमाल भी हैं, जिन्हें इसी नाम से जाना जाता है ।
8.	बैरक कम्बल, कम्बल या कम्बली	बैरक कम्बल किसी काउंट और किसी रंग के ऊनी धागे से बना रेशदार सतह वाला मोटा कपड़ा है जिसे मिलिंग और रेजिंग द्वारा तैयार किया जाता है । इसकी निम्नलिखित संयुक्त विशेषताएं भी हैं:— (1) ऊनी कम्बल ऊन और ऊनी धागे या अन्य रेशों के साथ मिलाकर तैयार किया जाता है । (2) इसे किसी भी लम्बाई-चौड़ाई और बुनाई में तैयार किया जाता है । (3) इस निदेश की कोई बात शोड़ी ऊनी धागे से बनाए गए बैरक कम्बल और कम्बल या कम्बलियों को लागू नहीं होगी । (4) जो ऊन और/या सूती या उनके किसी मिश्रण से सादा या चैक डिजाइन में बुना गया है, उसे कम्बल या कम्बली के रूप में परिभाषित किया जाएगा ।

1	2	3
9.	शाल, लोई, मफलर, पंखी इत्यादि	<p>शाल एक ऐसा कपड़ा है, जिसे वर्स्टेड अथवा ऊनी अथवा कैशमिलोन या पशमीना अथवा अन्य किसी रेशे और या उनके मिश्रण से बुना जाता है। इसका प्रयोग महिलाओं अथवा पुरुषों द्वारा अपने शरीर को ढकने के लिए किया जाता है व इसे कंधे के ऊपर बिना सिलाई प्रक्रिया के ओढ़ा जाता है। इसकी निम्नलिखित संयुक्त विशेषताएं भी हैं :—</p> <ol style="list-style-type: none"> (1) इसे किसी भी रेशे के प्रयोग से डिजाइन में तैयार किया जाता है, जिसमें अतिरिक्त बाना हो भी सकता है अथवा नहीं भी। (2) इसे किसी भी प्रकार के ऊनी धागे, वर्स्टेड धागे अथवा मिश्रित धागे और इनके मिश्रण से तैयार किया जाता है। (3) इसे किसी भी काउंट के धागे से तैयार किया जाता है। (4) इसे किसी भी लम्बाई-चौड़ाई और भार में तैयार किया जाता है, और (5) इसे सामान्यतः इसी नाम से जाना जाता है। शाल मद में लोई, पंखी व मफलर भी शामिल है। इसमें कुल्लू, किन्चोरी, कानी, पशमीना, धोरी, लिराचा (तिब्बती), स्कार्फ इत्यादि जैसी परम्परागत शालें भी शामिल हैं।
10.	ऊनी कपड़ा (वूलन ट्वीड)	<p>यह एक ऐसा कपड़ा है जिसे 100 प्रतिशत शुद्ध ऊनी धागे से बुना जाता है। इससे कोट, जैकेट और पहनने के कपड़े बनाए जाते हैं। इसकी निम्नलिखित संयुक्त विशेषताएं भी हैं :—</p> <ol style="list-style-type: none"> (1) इसे चेक या स्ट्राइप डिजाइन में लम्बाई-चौड़ाई को विचार में लाए बिना तैयार किया जाता है, और (2) इसे 3/1 टुइल बुनाई में तैयार किया जाता है।
11.	चादर, मेखला/फणिक	<p>यह शरीर के निचले भाग और/या ऊपरी भाग को ढकने के लिए उपयोग में लाया जाता है और यह सूत या रेशम या कृत्रिम रेशम या इनके किसी मिश्रण से तैयार किया जाता है, जो काउंट और लम्बाई-चौड़ाई को विचार किये बिना चेक या स्ट्राइप डिजाइन में सादा/दिवल बुनाई में बुना जाता है और इसकी किनारी और/या शीर्ष (क्रास बार्डर), अतिरिक्त ताने और/या बाने में होने की इसकी विशेषता है।</p> <p>टिप्पण :—</p> <p>उपरोक्त निदेश में निम्नलिखित भी सम्मिलित हैं :—</p> <ol style="list-style-type: none"> (1) मिजोरम का पुआन। (2) मेघालय का धारा, जेनसेम, झाकमंडा, इकसारी। (3) नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश के स्कर्टस् और औढ़ना कपड़े। (4) त्रिपुरा के रिहा और पचारा। (5) दक्षिणी राज्य के पावदा (सेट)/धावनी। (6) असम के दखोना, डका, खमलेट, फणिक। <p>[सं. 2/10/95-डी.सी.एच./सी.ई.ओ.]</p> <p>बी. एल. शर्मा, संयुक्त सचिव और विकास आयुक्त (हथकरघा)</p>

MINISTRY OF TEXTILES

ORDER

New Delhi, the 26th July, 1996

S.O. 557 (E).—In exercise of the powers conferred by sub-section (1) of Section 3 of the Handlooms (Reservation of Articles for Production) Act, 1985 (22 of 1985), and in supersession of the order No. 459 (E) dated the 4th August, 1986 and order No. 477 (E) dated 6th August, 1986 of the Government of India in the Ministry of Textiles, the Central Government being satisfied after considering the recommendations made to it by the Advisory Committee that it is necessary to do for the protection and development of the Handloom Industry hereby directs with immediate effect that the articles of class or articles specified in the Table below shall be reserved for exclusive production by Handlooms, namely :—

TABLE

S. No.	Article	Range reserved for production by Handlooms
1	2	3
1.	Saree	<p>(a) A saree is a fabric made out of cotton or silk or in any combination thereof irrespective of count of yarn and dimensions, which is commonly known by that name and is characterised by the following :</p> <p>(i) has extra warp and/or extra weft design in the border and/or heading and/or body including buttas containing any coloured or grey or bleached yarn or zari or any other metallic/metallised yarn or in combination thereof ;</p> <p style="text-align: center;">and/or</p> <p>(ii) has a solid coloured woven border.</p> <p>(b) Tie and dye saree, warp-wise and/or weft-wise made out of cotton or silk or art silk or in any combination thereof irrespective of count of yarn and dimensions with or without extra warp or extra weft solid woven border.</p>
		NOTE
		<p>(i) Nothing in this direction shall apply to Sarees made out of 100% synthetic fibre/yarn i.e. Polyester, Nylon etc. or in any combination thereof.</p> <p>(ii) Nothing in this direction shall apply to sarees made in blends or union with more than 45% by weight of man-made fibre/yarn (including viscose rayon) in combination with any natural or man-made fibre/yarn.</p> <p>(iii) Nothing in this direction shall apply to crepe, chiffon, chinon, georgettes and cotton voile sarees.</p> <p>(iv) Nothing in this direction shall apply to grey/bleached Silk Sarees having a border in extra warp design.</p>
2.	Dhoti	<p>Dhoti is a fabric made out of cotton or silk or in any combination thereof woven with extra warp and/or extra weft design using more than 16 dents inclusive of selvedge in the border (including solid coloured woven border) and/or extra weft heading irrespective of count and dimensions, which are commonly known by that name.</p> <p>NOTE</p> <p>(i) Nothing in this direction shall apply to Dhoties made out of 100% synthetic fibre/yarn i.e. Polyester, Nylon etc. or in any combination thereof ;</p> <p>(ii) Nothing in this direction shall apply to Dhoties made in blends or union with more than 45% by weight of man-made fibre/yarn (including viscose rayon) in combination with</p>

1	2	3
		any natural or man-made fibre/yarn.
3. Towel, Gamcha and Angavastram		<p>A towel is a fabric woven in plain, mat, twill, honey-comb, huckaback or a combination of these weaves with border or heading which is also jointly characterised by the following :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) is made of cotton or blends of cotton with any other fibre; (ii) are made in different dimensions; (iii) may be white or coloured; and (iv) may contain decorative design when produced on jacquard; (v) Towels with mat weave is commonly known as Erazha Thorthu in Kerala and Erazha Thundu in Tamil Nadu and also includes Gamcha & Angavastram.
4. Lungi		Lungi is a fabric made out of cotton or art silk or in any combination thereof having a width of 110 cms. or above and 64 ends per inch and above and woven in check and/or stripe design using coloured yarn to form check and/or stripe pattern.
5. Khes, Bedsheet, Bedcover, Counterpane, Furnishing. (including tapestry, upholstery)		<p>Khes, bedsheet, bedcover, counterpane, furnishing (including tapestry, upholstery) and by whatever name they may be called in different parts of country, including double cloth and tie & dye, made out of cotton or art silk or in any combination thereof, woven with design pattern on multi-treadle loom and/or with dobby and/or jacquards upto 200 hooks in case of pure cotton warp and upto 400 hooks in case of combination of cotton & art silk warp, irrespective of count and dimensions.</p> <p>NOTE Nothing in this direction shall apply to plain sheeting.</p>
6. Jamakkalam Durry or Durret		Jamakkalam Durry or Durret commonly known by that name made out of cotton or art silk or wool or jute or in any combination thereof using coarse count of single yarn or plies of resultant count having upto 24 ends/inch, woven with plain weave or twill weave or in combination of both twill and plain weave in any dimension.
7. Dress Material		Dress material including Mashru cloth and yarn tie & dye cloth, made out of cotton or silk (including spun silk) or art silk or in any combination thereof woven with extra weft design in the border and/or body irrespective of count and dimensions. This also includes Telia Rumal, Real Madras Handkerchief which are commonly known by that name.
8. Barrack Blankets, Kambal or Kamblies		<p>Barrack blanket is a thick fabric made of woollen yarn of any count and any colour having fibrous surface produced by milling and raising which is also jointly characterised by the following :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) woollen blankets made from wool and woollen yarn or in any combination with other fibres; (ii) it is produced in any size and weave; (iii) nothing in this direction shall apply to Barrack Blankets and Kambal or Kamblies made out of shoddy woollen yarn; (iv) whereas Kambal or Kamblies would be defined as a fabric made of wool and/or cotton or in any combination thereof woven in plain or check design.
9. Shawl, Loi, Muffler, Pankhi etc.		<p>Shawl is a piece of cloth woven from worsted or woollen or cashmilon or Pashmina or any other fibre and/or blends thereof which is used by ladies or gents for covering their body/worn over the shoulders without any tailoring process which is also jointly characterised by the following :</p> <ul style="list-style-type: none"> (i) woven with designs with or without extra weft using any fibre ; (ii) using any type of woollen yarn, worsted yarn or blended yarn or in combination thereof; (iii) it is woven with any count of yarn ;

- (iv) it is woven in any length, width and weight ; and
- (v) is commonly known by that name.

The term shawl also includes Loi, Pankhi as well as mufflers. It will also include traditional shawls like Kullu, Kinnauri, Kani, Pashmina, Dhori, Lirancha (Tibetan), Scarf etc.

10. Woollen Tweed

It is a piece of fabric woven by 100% pure woollen yarn for making coats, jackets and dress materials and is also jointly characterised by the following :

- (i) it is produced in check or stripe design irrespective of dimensions; and
- (ii) it is produced in 3/1 twill weave.

11. Chaddar, Mekhala/Phanek

It is used for covering lower and/or upper part of the body and is manufactured from cotton or silk or art silk or in any combination thereof woven in plain/twill weave with check or stripe design irrespective of count and dimensions and is characterised by a border and/or cross border with extra warp and/or extra weft design.

NOTE

The direction above shall also include :

- (i) Puan of Mizoram.
- (ii) Dhara, Jainsem, Dakmanda, Daksari of Meghalaya.
- (iii) Skirts and Odhana fabrics of Nagaland & Arunachal Pradesh.
- (iv) Riha and Pachara of Tripura.
- (v) Pawde (set)/Dhawani of Southern State.
- (vi) Dakhona, Danka, Khamlet, Phanak of Assam.

[No. 2/10/95-DCH/CEO]

B.L. SHARMA, Jt. Secy. & Development Commissioner (Handlooms)

